इकाई 7 अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय

7.3.1 अर्थशास्त्र और उसकी परंपरा

7.3.2 अर्थशास्त्र के लेखक

7.3.3 अर्थशास्त्र का संस्कृत साहित्य पर प्रभाव

7.3.4 कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषय वस्तु

7.4 सारांश

7.5 शब्दावली

7.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

7.7 अभ्यास हेतु प्रश्नों के उत्तर

7.8 उपयोगी पुस्तकें

7.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :–

- कौटिल्य अर्थशास्त्र की परंपरा का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे;
- अर्थशास्त्र के लेखक के विभिन्न नामों से परिचित हो पाएँगे;
- अर्थशास्त्र के प्रभाव को संस्कृत साहित्य पर देख पाएँगे; और
- कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषय वस्तु से परिचित हो पाएँगे।

7.2 प्रस्तावना

- कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों, 180 प्रकरणों, 150 अध्यायों तथा 6 हजार श्लोकों से युक्त एक विशाल ग्रंथ है ।
- मनुष्यों की जीविका एवं मनुष्यों से युक्त भूमि को अर्थ कहते हैं। इस प्रकार की भूमि को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है।
- कौटिल्य ने अपने पूर्ववर्ती लगभग अठारह – उन्नीस अर्थशास्त्रविद् आचार्यों का उल्लेख किया है; जिनसे विचार ग्रहण कर उन्होंने अपने अदभुत ग्रन्थ का निर्माण किया।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र के उद्धारक के रूप में पं. शामशास्त्री को जाना जाता है। श्री शास्त्री जी ने मैसूर राज्य से प्राप्त कर इस महाग्रन्थ के कुछ अंशों को सर्वप्रथम 1905 में इण्डियन एण्टीक्वेरी में अनुवाद सहित प्रकाशित करवाया और बाद में

1909 में सम्पूर्ण ग्रन्थ को शुद्धता के साथ प्रकाशित भी किया।

- अर्थशास्त्र के लेखक के रूप में आचार्य कौटिल्य प्रथित हैं । आचार्य कौटिल्य की ख्याति विभिन्न नामों से है । चाणक्य उन्हें चणक का पुत्र होने के कारण और कौटिल्य उन्हें कुटिल राजनीतिज्ञ होने के कारण कहा जाता है । वे दोनों नाम उनके पितृ–प्रदत्त न होकर वंश–नाम या उपाधि नाम हैं । कौटिल्य का वास्तविक पितृ–प्रदत्त नाम विष्णुगुप्त है ।
- ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में वर्तमान संस्कृत के सुपरिचित महाकवि कालिदास से लेकर याज्ञवल्क्य, वात्स्यायन, विष्णुशर्मा, विशाखदत्त तथा बाण प्रभृति महाकवियों, स्मृतिकारों, गद्यकारों और नाटककारों की सातवीं शताब्दी ईस्वी तक की रची गयी संस्कृत साहित्य की कृतियाँ अर्थशास्त्र से प्रभावित हैं।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण में 18 अध्याय, द्वितीय अधिकरण में 38, तृतीय अधिकरण में 19, चतुर्थ अधिकरण में 13, पञ्चम अधिकरण में 7, छठे अधिकरण में दो, सातवें अधिकरण में 29, आठवें अधिकरण में 8, नवें अधिकरण में 12, दसवें अधिकरण में 13, ग्यारहवें अधिकरण में 2, बारहवें अधिकरण में 9, तेरहवें अधिकरण में 6, चौदहवें अधिकरण में 3 और पन्द्रहवें अधिकरण में एक अध्याय हैं।

7.3 अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय

कौटिल्य (विष्णुगुप्त अथवा चाणक्य) आज एक सर्वविदित नाम है। कौटिल्य ने "अर्थशास्त्र" नामक विशाल ग्रन्थ की रचना करके आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में न केवल भारत के समक्ष अपितु सम्पूर्ण विश्व के समक्ष भारतीय मेधा का एक नव आदर्श राज्य व्यवस्था के लिए रखा। 1905 ई. में कौटिल्य का प्रसिद्ध ग्रन्थ अर्थशास्त्र पं. शामशास्त्री के अथक प्रयास से जनसाधारण के समक्ष प्रकाश में आया है।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों, 180 प्रकरणों, 150 अध्यायों तथा 6 हजार श्लोकों से युक्त एक विशाल ग्रंथ है जिसमें अर्थनीति, राजनीति, धर्मनीति, कार्यनीति, तथा प्रशासन, कानून, मैत्री, युद्ध, रहस्य और जादू–टोने से लेकर कूटनीति तक की सारगर्भित व्याख्याएँ वर्णित हैं। आचार्य कौटिल्य ने पृथिवी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए पुरातन आचार्यों ने जितने भी अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थों का निर्माण किया, उन सबका सार–संकलन कर अर्थशास्त्र की रचना की है । (पृथिव्या लाभे पालने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यः प्रस्थापितानि प्रायशस्तानि संहृत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम्।[1])

7.3.1 अर्थशास्त्र और उसकी परंपरा

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के प्राचीन भारत में छोटे–छोटे राज्यों के रूप में प्रजातंत्र, गणतंत्र और राजतंत्र की शासन प्रणालियां प्रचलित थीं। अखिल भारत सोलह महाजनपदों में विभाजित था। महाजनपदों के राजा अपने–अपने राज्य के विस्तार के लिए निरंतर युद्ध करते रहते थे, और सभी जनपदों के राजा अपनी–अपनी सैन्य शक्ति

[1] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), पृ. 1

बढ़ाने में प्रयत्नशील रहा करते थे। पालि त्रिपिटक के सुत्तपिटक के अंगुत्तर निकाय में भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।

अंगुत्तर निकाय के अनुसार महाजनपदों का क्रम निम्न प्रकार से रखा गया है– (1) अंग (2) मगध (3) काशी (4) कौशल (5) वज्जि (6) मल्ल (7) चेदि (8) वत्स (9) कुरु (10) पांचाल (11) मत्स्य (12) शूरसेन (13) अश्मक (14) अवन्ति (15) गांधार (16) कम्बोज।[2]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के इस समय कल्पसूत्रों की रचना की जा रही थी ताकि राजतंत्रों में एक व्यवस्था का निर्माण हो सके । कौटिलीय अर्थशास्त्र के सैकड़ों शब्दों पर कल्पसूत्रों की शब्दावली एवं रचना शैली का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। अर्थशास्त्र ग्रन्थ का निर्माण कल्पसूत्रों के बहुत बाद का है ।

सूत्रकाल की समाप्ति के लगभग अर्थशास्त्र एक प्रामाणिक शास्त्र के रूप में समादृत हो चुका था । सूत्र–ग्रन्थों में अर्थशास्त्र विषयक चर्चाओं को देख कर उसकी मान्यता का सहसा अनुमान लगाया जा सकता है। आश्वलायन गृह्यसूत्र में तो आदित्य नामक एक अर्थशास्त्रविद् आचार्य का उल्लेख मिलता है। महाभारत में भारतीय राजनीतिशास्त्र का इतिहास मिलता है और इस परंपरा के कतिपय प्राचीन आचार्यों की सूची भी वहां प्राप्त होती है।

आरम्भ में दण्डनीति और शासन–सम्बन्धी कार्यों का उल्लेख भी अर्थशास्त्र के लिए ही होता था, किन्तु कौटिल्य के बाद अर्थशास्त्र से केवल जनपद–सम्बन्धी कार्यों का ही विधान होने लगा था । अर्थ की व्याख्या करते हुए कौटिल्य ने लिखा है –

"मनुष्याणां वृत्तिरर्थः, मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः, तस्याः पृथिव्या लाभ पालनोपायः शास्त्रमर्थशास्त्रमिति।[3]

अर्थात् मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं। मनुष्यों से युक्त भूमि को भी अर्थ कहते हैं। इस भूमि को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है।

विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में आचार्य उष्ण के राजनीतिशास्त्र विषयक ग्रन्थ को दण्डनीतिशास्त्र और वात्स्यायन ने कामसूत्र में आचार्य बृहस्पति के ग्रन्थ को अर्थशास्त्र तथा महाभारतकार ने प्रजापति के ग्रन्थ को राजशास्त्र कहकर स्मरण किया है। वाचस्पति गैरोला का मानना है कि समस्त पूर्ववर्ती आचार्य–परंपरा के सिद्धान्तों और उनकी वे कृतियाँ, जो कि सम्प्रति अनुपलब्ध हैं, उन सब का एक साथ निष्कर्ष हम कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पाते हैं । कौटिल्य ने अपने पूर्ववर्ती लगभग अठारह उन्नीस अर्थ– शास्त्रविद् आचार्यों का उल्लेख किया है; जिनसे विचार ग्रहण कर उन्होंने अपने अदभुत ग्रन्थ का निर्माण किया। इस प्राचीन आचार्य–परंपरा के परिचय से ऐसा प्रतीत होता है कि अर्थशास्त्र का निर्माण बहुत पहले से होने लगा था और विभिन्न ग्रन्थों में

[2] इमेसं सोळसन्नं महाजनपदानं पहूतरत्तरतनानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेय्य, सेय्यथिदं दृ अङ्गानं मगधानं कासीनं कोसलानं वज्जीनं मल्लानं चेतीनं वङ्गानं कुरूनं पञ्चालानं मच्छानं सूरसेनानं अस्सकानं अवन्तीनं गन्धारानं कम्बोजानं। अंगुत्तर निकाय, 8/5/3 (विसाखासुत्तं)

[3] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), पृ. 765

आदर के साथ उल्लेख किया जाने लगा था, जिसकी व्यापक व्याख्या हम कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पाते हैं ।

ईस्वी पूर्व 400 के अनन्तर और 400 के बीच में रचे गये धर्मशास्त्र – विषयक ग्रन्थों में सर्वत्र ही हमें अर्थशास्त्र की विस्तृत चर्चाएँ और प्राचीन अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों का उल्लेख देखने को मिलता है। किन्तु ये सभी चर्चाएँ इतस्ततः विकीर्ण हैं। ईसा की छठीं और सातवीं शताब्दी में विरचित अग्नि और मत्स्य आदि पुराणों में भी यद्यपि अर्थशास्त्र सम्बन्धी चर्चाएँ और तत्सम्बन्धी कुछ आचार्यो के नाम उपलब्ध होते है। अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थ बृहस्पतिसूत्र को डा. एफ. डब्ल्यू. थामस ने खोज कर सम्पादित एवं प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ अपने मूलरूप में बहुत प्राचीन था, किन्तु जिस रूप में आज वह उपलब्ध है, वह नवम – दशम शताब्दी का पुनः संस्करण है । इसी प्रकार दूसरा ग्रन्थ दसवीं शताब्दी में विरचित सूत्रात्मक शैली का नीतिवाक्यामृत है, जिसके रचयिता का नाम सोमदेव था।

तदनन्तर 10वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक की कोई कृति उपलब्ध नहीं होती । अर्थशास्त्र विषयक ग्रंथों की निर्माण–परम्परा लगभग 18वीं शताब्दी तक पहुँचती है। अर्थशास्त्र का यह अन्तिम समय नितान्त अवनति का रहा है । 14वीं से 18वीं शताब्दी तक के ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों में राजनीति रत्नाकर के लेखक चन्द्रशेखर, वीरमित्रोदय के लेखक मित्रमित्र और राजनीतिमयूख के लेखक नीलकंठ प्रमुख हैं।

अर्थशास्त्र और उसके निर्माता कौटिल्य के सम्बन्ध में जितना विवाद रहा, उससे कहीं अधिक भ्रमपूर्ण धारणाएँ उसके स्थिति–काल के सम्बन्ध में प्रचारित हुई। आचार्य कौटिल्य की जीवन–सम्बन्धी जानकारी और उनके अद्‌भुत ग्रन्थ अर्थशास्त्र की छानबीन करने में विदेशी विद्वानों का वर्षों तक घोर विवाद चलता रहा। इस तक्र–वितक्र और वाद–विवाद की परंपरा में देशी–विदेशी विद्वानों का भरपूर हाथ रहा उनमें पं. शामशास्त्री, महामहोपाध्याय पं. गणपतिशास्त्री, श्री काशीप्रसाद जायसवाल, श्री नरेद्रनाथ साहा, श्री राधाकुमुद मुकर्जी, श्री देवदत्त रामकृष्ण भंडारकर, श्री रमेश पवार, श्री उपेन्द्र चौपाल, श्री प्राणनाथ विद्यालंकार, श्री विनयकुमार सरकार और श्री जयचन्द विद्यालंकार प्रमुख है। इसी प्रकार विदेशी विद्वान में श्री हिलेबाट, श्री हल, याकोबी साहब, श्री विसेंट स्मिथ, श्री बीटी स्टाइल, डा. जोली, डा. विटरनित्स और डा. कीथ के नाम उल्लेखनीय है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र के उद्धारक के रूप में पं. शामशास्त्री का नाम अर्थशास्त्र की महानता के साथ समादृत है। श्री शास्त्री जी ने मैसूर राज्य से प्राप्त कर इस महाग्रन्थ के कुछ अंशों को पहले–पहल 1905 में इण्डियन एण्टीक्वेरी में अनुवाद सहित प्रकाशित करवाया और बाद में 1909 में सम्पूर्ण ग्रन्थ को शुद्धता के साथ प्रकाशित भी किया। पं. शामशास्त्री ने ग्रन्थ के विस्तृत उपोद्‌घात में बड़े पाण्डित्यपूर्ण प्रमाणों के आधार पर अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में तीन बातों का विशेष रूप से उल्लेख किया। पहली बात तो उन्होंने यह बतायी कि आचार्य कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के आमात्य थे, दूसरी बात उन्होंने यह दिखायी कि अर्थशास्त्र कौटिल्य की ही कृति है और तीसरा निराकरण उन्होंने यह भी किया है कि अर्थशास्त्र का यही प्रामाणिक मूलपाठ है।

7.3.2 अर्थशास्त्र के लेखक

अर्थशास्त्र के लेखक के रूप में आचार्य कौटिल्य प्रथित हैं । आचार्य कौटिल्य का व्यक्तित्व भारतीय राजनीतिज्ञ के रूप में मौर्य साम्राज्य के विपुल यश के साथ अनुस्यूत हो गया है। आचार्य कौटिल्य के नाम–माहात्म्य की कथाएँ पुराणों से लेकर काव्य, नाटक और कोष–ग्रन्थों में सर्वत्र ख्यात हैं । कौटिल्य द्वारा नंद वंश के विनाश और मौर्य वंश की प्रतिष्ठा से सम्बन्धित विष्णुपुराण में एक कथा आती है : –

महापद्मपुत्राश्चैकं वर्षशतमवनीपतयो भविष्यन्ति । ततश्च नवचैतान्नन्दान् कौटिल्यो ब्राह्मणः समुद्धरिष्यति। तेषामभावे मौर्याश्च पृथिवीं भोक्ष्यन्ति । कौटिल्य एव चन्द्रगुप्तसुत्पन्नं राज्येऽभिषेक्ष्यति। तस्यापि पुत्रो बिन्दुसारो भविष्यति । तस्याप्यशोकवर्धनः।[4]

अर्थात् महापद्म तथा उसके नौ पुत्र 100 वर्ष तक राज्य करेंगे । कौटिल्य नामक एक ब्राह्मण उस राज्य परम्परा के अंतिम उत्तराधिकारी नंदवंश का विनाश करेगा। नंद वंश के समूल विनष्ट हो जाने के उपरान्त उसकी जगह मौर्य वंश के पहले प्रतापी शासक चन्द्रगुप्त का कौटिल्य राज्याभिषेक करेंगे। उसका पुत्र बिन्दुसार और बिन्दुसार का पुत्र अशोक होगा।

इस पौराणिक विवरण से दो बातों का स्पष्ट पता लगता है कि मगध के राज्य–सिहासन पर पहले नन्द वंश का अधिकार था और उसके बाद कौटिल्य ने अपने कौशल से मगध की राज सत्ता छीन कर मौर्य वंश के हाथों में आ गई । इस दृष्टि से मौर्य वंश की सत्यता पर आधारित आचार्य कौटिल्य के सही व्यक्तित्व का पता लगाने के लिये नंद वंश की प्रामाणिक जानकारी उससे भी पूर्व मगध की शासन–परम्परा से परिचय प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है।

आचार्य कौटिल्य की ख्याति विभिन्न नामों से है । उनका एक लोक–विश्रुत नाम चाणक्य भी है। चाणक्य उन्हें चणक का पुत्र होने के कारण और कौटिल्य उन्हें कुटिल राजनीतिज्ञ होने के कारण कहा जाता है। वे दोनों नाम उनके पितृ–प्रदत्त न होकर वंश–नाम या उपाधि नाम हैं ।

कौटिल्य का वास्तविक पितृ–प्रदत्त नाम विष्णुगुप्त था । कौटिल्य के इस विष्णुगुप्त नाम का हवाला आचार्य कामंदक के नीतिसार में उपलब्ध होता है, जिसकी रचना 400 ई. के लगभग हुई । आचार्य कामन्दक कृत नीतिसार के आरंभिक अंश में हमें चार बातों की जानकारी होती है। पहली बात तो यह कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की, दूसरी बात यह कि कामन्दक के नीति–ग्रंथ का आधारभूत वही अर्थशास्त्र था, तीसरी बात यह कि कौटिल्य ने नन्द–वंश का उन्मूलन कर उसकी जगह मौर्य वंश को प्रतिष्ठित किया और चौथी बात यह कि कौटिल्य का असली नाम विष्णुगुप्त था।

कामंदक ने नीतिसार में लिखा है –

नीतिशास्त्रामृतं धीमानर्थशास्त्र महोदधे ।
समुद्रघे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे ।[5]

[4] विष्णुपुराण, 4/24/25–30

[5] कामंदक, नीतिसार, 1/6, पृ. 4

अर्थात् नीतिसार उसी विद्वान् के ग्रन्थ का आधार है, जिसके वज्र ने पर्वत की तरह अविचल, अडिग नन्द वंश को उखाड़ फेंका था, जिसने चन्द्रगुप्त को पृथ्वी का स्वामित्व दिया और जिसने अर्थशास्त्र रूपी महार्णव से नीतिशास्त्र रूपी नवनीत का दोहन किया, ऐसे उस महामति विष्णुगुप्त नामक विद्वान् को नमस्कार है । आचार्य हेमचन्द्र ने भी विष्णुगुप्त, कौटिल्य एवं चाणक्य इन तीनों शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा है –

विष्णुगुप्तस्तु कौटिल्यश्चाणक्यो द्रामिलो गुलः।
वात्स्यायनो मल्लनागः पाक्षिलस्वामिनावपि ।।

वात्स्यायनो मल्लनागः कौटिल्यश्चणकात्मजः ।
द्रामिलः पाक्षिलः स्वामी विष्णुगुप्तो गुलश्च स ।।[6]

विभिन्न कोष–ग्रन्थों की नामावली की उपलब्धता से आचार्य कौटिल्य के वास्तविक नाम और उनके लिए प्रयुक्त होने वाले दूसरे नामों का स्वतः ही निराकरण हो जाता है । कामन्दकीय नीतिसार के पूर्वोक्त प्रमाणों से सुनिश्चित है कि अर्थशास्त्र का निर्माण आचार्य कौटिल्य ने किया। कुछ दिन पूर्व विदेशी विद्वानों के एक वर्ग ने यहाँ तक सिद्ध करने की चेष्टा की थी कि अर्थशास्त्र एक जाली ग्रन्थ है और जिसके नाम को उसके साथ जोड़ा गया है, वह कौटिल्य भी एक कल्पित नाम है । अर्थशास्त्र में समाप्ति–सूचक श्लोकों में कहा गया है–

येन शास्त्रं च शस्त्रं च नन्दराजगता च भूः ।
अमर्षेणोद्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम् ।।

दृष्ट्वा विप्रतिपत्त बहुधा शास्त्रेषु भाष्यकाराणाम् ।
स्वयमेव विष्णुगुप्तचकार सूत्रं च भाष्यं च ।।[7]

अर्थात् जिसने शास्त्र, शस्त्र और नन्दराजा के अधीनस्थ भूमि का शीघ्र उद्धार अपने क्रोध किया है, उसी विष्णुगुप्त कौटिल्य ने इस अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थ की रचना की है। प्राचीन अर्थ शास्त्रों में बहुधा भाष्यकारों के मतभेदों को देखकर स्वयं ही विष्णुगुप्त कोटिल्य ने इस अर्थशास्त्र के सूत्रों और उनके भाष्य का निर्माण किया है।

अन्तः एवं बाह्य सभी साक्ष्य अर्थशास्त्र का लेखक आचार्य विष्णुगुप्त या कौटिल्य को ही ठहराते हैं ।

7.3.3 अर्थशास्त्र का संस्कृत साहित्य पर प्रभाव

संस्कृत–साहित्य के कतिपय ग्रन्थकारों की कृतियों पर अर्थशास्त्र का प्रभाव है, जिससे उसकी सार्वभौम मान्यता का सहज में ही पता चलता है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में वर्तमान संस्कृत के सुपरिचित महाकवि कालिदास से लेकर याज्ञवल्क्य, वात्स्यायन, विष्णुशर्मा, विशाखदत्त तथा बाण प्रभृति महाकवियों, स्मृतिकारों, गद्यकारों और नाटककारों की सातवीं शताब्दी ईस्वी तक की रची गयी कृतियाँ अर्थशास्त्र से प्रभावित हैं। वैसे भी स्वतन्त्र रूप से अर्थशास्त्र का दाय लेकर अनेक तद्विषयक कृतियाँ

[6] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), भूमिका भाग, पृ. 66
[7] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), पृ. 771

संस्कृत में निर्मित हुई, किन्तु दूसरे विषय के जिन ग्रन्थों में कौटिल्य अर्थशास्त्र का महत्त्व एवं उसकी शैली का अनुकरण है, उनकी संख्या भी पर्याप्त है।

महाकवि कालिदास के रघुवंश, कुमारसंभव और शाकुन्तल अत्यधिक रूप से अर्थशास्त्र से प्रभावित हैं। इसी प्रकार याज्ञवल्क्य– स्मृति (150 ई.) भी अर्थशास्त्र के प्रभाव से अछूती नहीं । आचार्य वात्स्यायन (300 ई.) ने तो अपने कामसूत्र का एकमात्र आधार कौटिल्य का अर्थशास्त्र स्वीकार किया है और इसी हेतु इन दोनों का प्रकरण–विभाजन भी एक जैसा है।

संस्कृत के पशुकथाओं का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ पञ्चतन्त्र संप्रति अपने मूल में उपलब्ध नहीं है, जिसकी रचना 300 ई. पू. मानी जाती है और अपने विषय का जिसे दुनिया के पशु कथा काव्यों में पहला स्थान प्राप्त है, तथापि उसके विभिन्न छायारूपों में विष्णु शर्मा कृत पञ्चतन्त्र ही प्रधान माना जाता है, जिनकी रचना कथमपि 300 ई. के बाद की नहीं है। पञ्चतन्त्र में चाणक्य के अर्थशास्त्र को मनुस्मृति और कामसूत्र की भांति अपने विषय का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ कह कर स्मरण किया गया है। (ततो धर्मशास्त्राणि मन्वादीनि, अर्थशास्त्राणि चाणक्यादीनि कामशास्त्राणि वात्स्यायनादीनि।[8]) पञ्चतन्त्र के प्रथम अध्याय में एक दूसरे स्थल पर अर्थशास्त्र को 'नयशास्त्र' नाम से भी अभिहित किया गया है।[9]

संस्कृत–साहित्य का एक नाटक मुद्राराक्षस है, जिसके रचयिता विशाखदत्त 600 ई. के लगभग हुए। यह नाटक एक प्रकार से आचार्य कौटिल्य की आंशिक जीवनी है। मुद्राराक्षस नाटक से महामति कौटिल्य के अतुल व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

विशाखदत्त के समकालीन कथाकार एवं काव्यशास्त्री आचार्य दण्डी ने कौटिलीय दण्डनीति के अध्ययन पर जोर दिया ही है, वरन् उस दण्डनीति के स्वरूप के सम्बन्ध में भी एक ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है। दण्डी का कथन है कि 'आचार्य विष्णुगुप्त निर्मित उस दण्डनीति का अध्ययन करो, जिसको उन्होंने मौर्य (चन्द्रगुप्त) के लिये छः हजार श्लोकों में संक्षिप्त किया था। जो भी इस उत्तम ग्रन्थ को पढ़ेगा उसको उत्तम फल मिलेगा।' (अधीष्व तावद्दण्डनीतिम् । तदिदमिदानीमाचार्यविष्णुगुप्तेन मौर्यार्थे षड्भिः श्लोकसहस्रैः संक्षिप्ता । सैवेयमधीत्य सम्यगनुष्ठीयमानयथोक्तकार्यक्षमेति।[10])

कादम्बरी जैसे बृहत्कथा काव्य के निर्माता बाणभट्ट (700 ई.) ने कौटिल्य शास्त्र का उल्लेख तो किया है, उन्होंने अर्थशास्त्र को निकृष्ट शास्त्र की संज्ञा दी है । बाण का कथन है कि उन लोगों के लिये क्या कहा जाय जो अति नृशंस कार्य को उचित बताने वाले कौटिल्य के शास्त्र को प्रमाण मानते हैं' । (किं वा तेषां सांप्रतं येषामतिनृशंसप्रायोपदेशे कौटिल्यशास्त्रप्रमाणम्।[11])

[8] विष्णुशर्मा, पञ्चतन्त्र, कथामुख, पृ. 3
[9] वही, पृ. 5
[10] दण्डी, दशकुमारचरितम्, 8/8
[11] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), कथामुख, पृ. 71

7.3.4 कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषय वस्तु

आचार्य कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के आरम्भ में प्रकरणाधिकरणसमुद्देश में कहा है –

"शास्त्रसमुद्देशः पञ्चदशाधिकरणानि सपञ्चाशदध्यायशतं साशीतिप्रकरणशतं षट् श्लोकसहस्राणीति।[12]

अर्थात् इस प्रकार सम्पूर्ण कौटिलीय अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण; एक सौ पचास अध्याय; एक सौ अस्सी प्रकरण और छह हजार श्लोक हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आधार पर पन्द्रह अधिकरणों का वर्ण्य विषय निम्नानुसार है –

पहला अधिकरण : विनयाधिकारिक निरूपण

प्रथम अधिकरण में 18 अध्याय हैं, जिनमें क्रमशः 1. विद्या–विषयक विचार; 2. वृद्धजनों की संगति 3 इन्द्रियजय; 4. अमात्यों की नियुक्ति; 5. मन्त्री और पुरोहित की नियुक्ति, 6. गुप्त उपायों से अमात्यों के आचरणों की परीक्षा 7. गुप्तचरों का निरूपण 8. गुप्तचरों की कार्यों पर नियुक्ति; 9. अपने देश में कृत्य अकृत्य पक्ष की सुरक्षा; 10. शत्रुदेश में कृत्य– अकृत्य पक्ष को मिलाना, 11. मंत्राधिकारः 12. दूतों की कार्यों पर नियुक्ति 13. राजपुत्र की रक्षा; 14. नजरबन्द राजकुमार का व्यवहार; 15. नजरबन्द (राज– कुमार) के प्रति राजा का व्यवहार; 16. राजा के कार्य–व्यापार 17. राजभवन का निर्माण; 18. आत्मरक्षा का प्रबन्ध का विशद विवेचन किया गया है ।

प्रथम अधिकरण के चतुर्थ अध्याय में कौटिल्य ने विद्या द्वारा विनय को धारण करने वाले राजा को ही प्रजाओं में विनय अथवा अनुशासन की स्थापना कर सकने वाला बताया है। वह सर्व लोक – हित में तत्पर रहता हुआ, शत्रुरहित होकर, पृथ्वी का भोग करता है।

विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः।
अनन्यां पृथ्वी मुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः।।[13]

विद्याएँ चार हैं– आन्वीक्षिकी (सूक्ष्म तत्त्वों का अन्वीक्षण कराने वाली, दर्शन–विद्या), त्रयी (वेद–विद्या), वार्त्ता (वृत्ति अथवा जीविका को सिखाने वाली, अर्थ–विद्या) तथा दण्डनीति (राज्य में दंड व्यवस्था रखने वाली, शासन– विद्या) । गुप्तचरों की नियुक्ति पर कौटिल्य कहते हैं –

पूजिताश्चार्थमानाभ्यां, राजा राजौपजीविनाम् ।
जानीयुः शौचमित्येताः पञ्च संस्थाः प्रकीर्तिताः ।।[14]

राज्य में कर्मचारियों तथा प्रजा की शुद्धता जानने के लिए गुप्तचरों की नियुक्ति की जाए। राजा धन और मान द्वारा उन गुप्तचरों को सन्तुष्ट रखे। ये गुप्तचर पाँच प्रकार के हैं। राज्य–संचालन के लिए आवश्यक है कि गुप्तचरों की नियुक्ति की जाए। इनका साधारण कर्तव्य यह है कि वे प्रजा में राजा के विरुद्ध होने वाले षड्यन्त्रों की

[12] वही, पृ. 7

[13] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 1/4, पृ. 15

[14] वही, 1/10, पृ. 31

यथासमय सूचना दें। विशेष कर्त्तव्य यह है कि वे राजकर्मचारियों की शुद्धता का पता लगाते रहें और विद्रोही स्वभाव वालों की सूचना राजा को दें। धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा तथा भयोपधा – इन चार विधियों में राजकर्मचारियों एवं अमात्यों की शुद्धता तथा स्वामिभक्ति का लान हो सकता है।

दूसरा अधिकरण : अध्यक्षों का निरूपण

द्वितीय अधिकरण में 38 अध्याय हैं जिनमें क्रमशः 1. जनपदों की स्थापना 2. भूमि को उपयोगी बनाने का विधान 3. दुर्ग का निर्माण, 4. दुर्गविनिवेश; 5. सन्निधाता के कार्य 6 समाहर्त्ता का कर–संग्रह कार्य; 7. अक्षपटल में गाणनिक के कार्य; 8 गवन किए गये राजधन को पुनः प्राप्त करना है 9. उपयुक्त परीक्षा 10. शासनाधिकार 11. कोच में रखने योग्य रत्नों को परीक्षा 12. खान के कार्यों का संचालन 12, अक्षशाला में स्वर्गाध्यक्ष का कार्य 14. विशिखा में सौवणिक का व्यापार 12. कोठागार का अध्यक्ष 16. पण्य का अध्यक्ष 17. कुप्य का अध्यक्ष 18. आयुधागार का अध्यक्ष 19. तोल–माप का निश्चय 20. देश और काल का मान 21. शुल्क का अध्यक्ष; 22. सूत का अध्यक्ष 23. कृषि का अध्यक्ष 24. आवकारी का अध्यक्ष 25. वधस्थान का अध्यक्ष; 26. वेश्यालयों का अध्यक्ष 27. परिवहन का अध्यक्ष, 28. पशुओं का अध्यक्ष; 29. अश्वशाला का अध्यक्ष; 30. गजशाला का अध्यक्ष; 31. रथसेना का अध्यक्ष; 32 पैदल सेना का अध्यक्ष 33. सेनापति का कार्य, 34. मुद्रा– विभाग का अध्यक्ष 35. चरागाह का अध्यक्ष; 36. समाहर्त्ता का कार्य; 37. गृह– पति, वैदेहक तथा तापस के वेष में गुप्तचर; और 38. नागरिक के कार्य विषयों का विवेचन है।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राजा के कर्त्तव्यों में बताया है

दण्डविष्टिकराबाधैः रक्षेदुपहतां कृषिम् ।
स्तेनव्यालविषग्राहैः व्याधिभिश्च पशुव्रजान्।।[15]

अर्थात् दण्ड, विष्टि (बेगार), कर (टैक्स) आदि की बाधा से नष्ट होने वाली कृषि की राजा सर्वदा रक्षा करे, अर्थात् किसानों पर वह अधिक भार न डाले । इसी प्रकार चोर, सिंह प्राणी, विष प्रयोग तथा अन्य प्रकार की व्याधियों से किसानों के पशुओं की रक्षा करना भी राजा का कर्तव्य है। दुर्गों तथा नगरों के निर्माण पर आचार्य कौटिल्य का मानना है –

चतुर्दिशं जनपदान्ते साम्परायिकं दैवाकृत दुर्गं कारयेत्।
जनपदमध्ये समुदयस्थानं स्थानीयं निवेशयेत्।।[16]

देश के चारों तरफ सीमाओं पर राजा युद्धोचित, प्राकृतिक दुर्गों का निर्माण कराये और देश के बीच में धनवृद्धि के केन्द्र नगरों और राजधानी की स्थापना करे।

राजकर्मचारियों की भ्रष्टाचारिता के सम्बन्ध में आचार्य कौटिल्य का दृढ़ मन्तव्य है–

मत्स्याः यथान्तः सलिलं चरन्तो ज्ञातुं न शक्याः सलिलं पिबन्तः ।
युक्तास्तथा कार्यविधौ नियुक्ताः ज्ञातुं न शक्याः धनमाददानाः ।।[17]

---

[15] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 2/1, पृ. 81
[16] वही, 2/3, पृ. 85
[17] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 2/9, पृ. 117

जिस प्रकार पानी में प्रविष्ट मछली पानी पीती दिखाई नहीं देती, इसी तरह छोटे–छोटे अध्यक्ष, अपने–अपने कार्य पर नियुक्त हुए, राज्य के धन का अपहरण करते हुए जाने नहीं जा सकते।

तीसरा अधिकरण : न्याय का निरूपण

तृतीय अधिकरण में 19 अध्याय हैं जिनमें क्रमशः 1. व्यवहार की स्थापना; 2. विवाद पदों का विचार, 3. विवाह–सम्बन्धी विचार; 4. दाय–विभाग; 5. वास्तुक; 6. समय (प्रतिज्ञा) का न छोड़ना 7. ऋण लेना; 8. धरोहर सम्बन्धी नियम 9. दास और श्रमिकों के नियम 10. साझेदारी का हिस्सा; 11. क्रय–विक्रय–सम्बन्धी बयाना; 12. देने का वचन देकर फिर न देना; 13. अस्वामि–विक्रय; 14. स्व–स्वामि–सम्बन्ध 15. साहस; 16. वाक्पारुष्य, 17. दण्डपारुष्य 18. द्यूत–समाह्वय और 19. प्रकीर्ण विषयों का विवेचन है।

व्यवहार की स्थापना और विवाद सम्बन्धी बात पर कौटिल्य कहते हैं –

लेखन धर्मश्च व्यवहारश्च, चरित्रं राजशासनम्।
विवादार्थः चतुष्पादः, पश्चिमः पूर्वबाधकः ।।[18]

विवाद– सम्बन्धी कानून के चार चरण हैं, जिनसे विवाद का निर्णय किया जा सकता हैकृधर्म अर्थात् धर्मशास्त्रों की व्यवस्था, व्यवहार अर्थात् साक्ष्य, चरित्र अर्थात् सज्जनों का आचरण तथा राजशासन अर्थात् राजा से प्रचारित आज्ञाएं। इसमें जो पीछे हैं वे पूर्व से अधिक बलवान हैं।

चौथा अधिकरण : कण्टक–शोधन

चतुर्थ अधिकरण में 13 अध्याय हैं जिनमें 1. शिल्पियों से देश की रक्षा; 2. व्यापारियों से देश की रक्षा; 3. देवी आपत्तियों का प्रतीकार; 4. गुप्त पञ्चन्त्रकारियों से देश की रक्षा; 5. सिद्ध पुरुषों के बहाने प्रलोभन विद्याओं का प्रकाशन, 6. सन्देह, वस्तु और कार्य के द्वारा चोरों को पकड़ना, 7. आशुमृत की परीक्षा 8. वाक्यकर्मानुयोग 9. सभी राजकीय विभागों की रक्षा, 10. एक अङ्ग का वध या उसकी जगह द्रव्यदण्ड 11. शुद्धदण्ड और चित्रदण्ड 12. कुंवारी कन्या से सम्भोग करने का दण्ड और 13. अतिचार का दण्ड विषयों का वर्णन मिलता है ।

चतुर्थ अधिकरण प्रजा की रक्षा से सम्बंधित है, कौटिल्य कहते हैं –

एवं चौरानचौराख्यान् वणिक्कारुकुशीलवान्।
भिक्षुकान् कुहकांश्चान्यान् वारयेद् देशपीडनात्।।[19]

साहूकार, शिल्पी, नट, भिक्षुक, ऐन्द्रजालिक आदि चोर न कहलाने वाले वास्तव में चोर होते हैं और अपनी चतुराई से प्रजा को पीड़ित करते हैं। राजा इनसे प्रजा की रक्षा करे। प्रजा को पीड़ित करने वाले लोगों को कंटक कहते हैं। कंटकशोधन अर्थात् 'प्रजापीड़कों को साफ करना' राजा का कर्तव्य है। शिल्पी, साहूकार आदि प्रायः अपनी

[18] वही, 3/1, पृ. 259
[19] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 4/1, पृ. 351

चतुराई से प्रजा को धोखा देते हैं और उसे पीड़ित करते हैं। उनसे प्रजा की रक्षा करना राजा का धर्म है। अपराधियों को दण्ड देने की व्यवस्था पर कौटिल्य कहते हैं कि दण्ड देने वाला प्रदेष्टा अधिकारी अपराधी के व्यक्तित्व, अपराध, उसके कारण और गुरुता– लघुता का विचार करके एवं अपराध के परिणाम, तत्कालीन अवस्थाओं, देश और काल की परीक्षा करके तथा राजा और प्रजा का विवेक रखते हुए मध्यस्थ होकर उत्तम, मध्यम, अधम तीन प्रकार के दण्डों की उचित व्यवस्था करे। जिसका अपराध प्रमाणित हो जाए, उसी को दण्ड देना चाहिए।

अयोग्य कर्मचारियों को दण्ड की व्यवस्था का वर्णन निम्न है –

एवमर्थचरान् पूर्वं राजा दण्डेन शोधयेत्।
शोधयेयुश्च शुध्दास्ते, पौरजानपदान् दमैः।।[20]

राजा सर्वप्रथम अपने कर्मचारियों को दण्ड द्वारा ठीक चलाए फिर उचित दण्ड–व्यवस्था द्वारा उन कर्मचारियों की सहायता से देश की जनता का ठीक–ठीक अनुशासन करे । राजा को अपने कर्मचारियों पर कठोर नियन्त्रण रखना चाहिए। उनके अयोग्य अथवा भ्रष्टाचारी होने पर प्रजा बहुत पीड़ित होती है। इन प्रजापीड़कों को उचित दण्ड व्यवस्था द्वारा अनुशासन में रखना नितान्त आवश्यक है, तभी प्रजा का हित–सम्पादन सम्भव हो सकता है।

पाँचवाँ अधिकरण : योगवृत्त–निरूपण

पञ्चम अधिकरण में 7 अध्याय हैं जिनमें 1. दंडव्यवस्था; 2. कोश का संग्रह; 3. भृत्यों का भरण–पोषण; 4. राज्य– कर्मचारियों का व्यवहार; 5. व्यवस्था का यथोचित पालन; 6. राज्य का प्रतिसंधान ओर 7. एकैश्वर्य विषयों का विवेचन है।

कोष वृद्धि करते हुए राजा को कौटिल्य सलाह देते हैं –

पक्वं पक्वमिवारामात् फलं राज्यादवाप्नुयात् ।
आत्मच्छेदभयादामं वर्जयेत् कोपकारकम् ।।[21]

अर्थात् राजा को चाहिए कि वह दुष्ट पुरुषों का धन उसी प्रकार ले ले जिस प्रकार वाटिका से पके हुए फल को लिया जाता है; किन्तु धर्मात्मा पुरुषों का धन वह उसी प्रकार छोड़ दे जैसे कच्चे फल को छोड़ दिया जाता है। कच्चे फल के समान धर्मात्मा पुरुषों से वसूला गया धन प्रजा के कोप का कारण बन जाता है ।

छठा अधिकरण : प्रकृतियों का निरूपण

छठे अधिकरण में दो अध्याय हैं जिनमें 1. प्रकृतियों के गुण; और 2. शांति तथा उद्योग का विश्लेषण किया गया है।

राज्य की सात प्रकृतियों पर आचार्य कौटिल्य कहते हैं–

स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः।[22]

---

[20] वही, 4/9, पृ. 385
[21] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 5/2, पृ. 419
[22] वही, 6/1, पृ. 441

अर्थात् प्रकृतियाँ सात हैं – स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड (सेना), और मित्र है। परस्पर सहायक ये अंगभूत प्रकृतियाँ अपने–अपने कार्यों में लगी हुई राजसम्पत्ति नाम से कही जाती हैं । आत्मसम्पन्न राजा गुणहीन प्रकृतियों को भी गुणी बना लेता है, और आत्मसम्पन्नहीन राजा गुणसमृद्ध तथा अनुरक्त प्रकृतियों को भी नष्ट कर देता है ।

सातवाँ अधिकरणः छह गुणों का निरूपण

सातवें अधिकरण में कुल 29 अध्याय हैं जिनमें क्रमशः 1. छह गुणों का उद्देश्य; 2. क्षय, स्थान तथा वृद्धि का निश्चय, 2. बल– वान् का आश्रय; 4. सम, हीन तथा बलवान् आदि राजाओं का चरित 5. होन संधि; 6. विग्रह कर के आसन 7. संधि कर के आसन 8. विग्रह कर के यान 9. संधि कर के यान; 10. सामूहिक प्रमाण; 11. यातव्य और शत्रु के प्रति यान का निर्णय; 12. प्रकृतियों के क्षय, लोभ और विराग के हेतुः 13. सामवायिक राजाओ का विचार, 14. मिलकर आक्रमण, 15. परिपणित, अपरिपणित और अपसृत संधि; 16. द्वैधीभाव–सम्बन्धी सन्धि और विक्रम; 17. यातव्य–सम्बन्धी व्यवहार; 18. अनुग्राह्य मित्रविशेष; 19 . मित्रसंधि, हिरण्यसंधि, भूमिसंधि और कर्मसंधि, 20. पाणिग्राह–चिन्ता; 21. दुर्बल का शक्ति–संचय, 22. बलवान् से विरोध कर के दुर्ग– प्रवेश के कारण; 23. दंडोपनतवृत्त, 24. दंडोपनायिवृत्त 25. सन्धिकर्म 26. सन्धि– मोक्ष; 27. मध्यम का चरित 28. उदासीन का चरित; और 29. राजमंडल का चरित वर्णित है।

राज्य में षड्गुणों की व्यवस्था करना राजा का कर्तव्य है –

एवं षड्भिर्गुणैरेतै : स्थितः प्रकृतिमण्डले ।
पर्येषेत क्षयात स्थान, स्थानात् वृद्धिं च कर्मसु ।।[23]

राजा अपने प्रकृतिमण्डल में स्थित हुआ षड्गुण–नीति द्वारा क्षीणता से स्थिरता तथा स्थिरता से वृद्धि की अवस्था में जाने की चेष्टा करे। सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय और द्वैधीभाव–षड्गुण नीति के छः अंग हैं।

आठवाँ अधिकरण : व्यसनों का निरूपण

आठवें अधिकरण में 8 अध्याय हैं जिनमें 1. प्रकृतियों के व्यसन; 2. राजा और राज्य के व्यसनों पर विचार; 3. सामान्य पुरुषों के व्यसन; 4. पीडनवर्ग; 5. स्तम्भनवर्ग 6. कोषसंगवर्ग; 7. बलव्यसनवर्ग और 8. मित्रव्यसनवर्ग विषयों का विवेचन किया गया है।

पीड़नवर्ग पर अर्थशास्त्र में मिलता है–

पीडनानामनुत्पत्तावुत्पन्नानां च वारणे।
यतेत देशवृद्धयर्थं नाशे च स्तम्भसंगयोः ।।[24]

अर्थात् देश की सुख–समृद्धि के लिए राजा को चाहिए कि वह अपने राज्य में पीडनवर्ग को उत्पन्न न होने दे, अथवा उत्पन्न होने पर उनका निवारण करे। स्तम्भवर्ग और कोषसंग को नष्ट करने के लिए भी राजा को सतत यत्नवान् रहना चाहिए।

---

[23] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 7/1, पृ. 457
[24] वही, 8/4, पृ. 580

नवाँ अधिकरण : आक्रमण का निरूपण

नवें अधिकरण में 12 अध्याय हैं जिनमें 1. शक्ति, देश और काल के बलाबल का ज्ञान; 2. आक्रमण का समय; 3. सेनाओं के तैयार होने का समय; 4. सैन्य–संगठन 5. शत्रुसेना से मुकाबला, 6. पश्चात्को पचिन्ता, 7. बाह्य और आभ्यन्तर प्रकृति के कोप का प्रतीकार; 8. क्षय, व्यय और लाभ का विचार; 9. बाह्य और आभ्यन्तर आपत्तियां; 10. राजद्रोही और शत्रुजन्य आपत्तियाँ, 11 अर्थ, अनर्थ तथा संशय संबंधी आपत्तियाँ 12. उन आपत्तियों के प्रतीकारों के उपायों से प्राप्त होनेवाली सिद्धियाँ का वर्णन है।

कूट युद्ध अथवा मन्त्र युद्ध के बारे में अर्थशास्त्र में वर्णित है। विजेता राजा तभी प्रकाश युद्ध का आश्रय ले जब उसकी सेना सर्वथा सुव्यवस्थित हो, बाह्य तथा आभ्यन्तर विपत्तियों का प्रतिकार हो चुका हो और शत्रु पक्ष में अमात्य आदि प्रकृतियां निर्बल हो चुकी हों। अन्यथा वह कूट युद्ध अथवा मन्त्र द्वारा शत्रु को पराजित करने की चेष्टा करे। प्रकाश युद्ध में देश और काल का निर्देश करके परस्पर धर्म के नियमों को भंग न करते हुए, संग्राम किया जाता है । परन्तु कूट युद्ध में ऐसे किसी नियम का पालन करना आवश्यक नहीं। इसमें किसी भी साधन से शत्रु का नाश उद्देश्य होता है। झूठ, छल एवं प्रवंचना आदि का आश्रय भी इसमें अनुचित नहीं माना जाता। कूट युद्ध में शत्रु को छिपाकर मारा जा सकता है, रात को सोते हुए नष्ट किया जा सकता है, भागते हुए पीछा करके समाप्त किया जा सकता है।

दसवाँ अधिकरण : संग्राम का निरूपण

दसवें अधिकरण में कुल 13 अध्याय हैं जिनमें क्रमशः 1. छावनी का निर्माण; 2. छावनी का प्रयाण; 3. आपत्ति एवं आक्रमण के समय सेना की रक्षा; 4. कूटयुद्ध के भेद; 5. अपनी सेना को प्रोत्साहन; 6. अपनी और पराई सेना का प्रयोग; 7. युद्ध के योग्य भूमि 8 पदाति, अश्व, रथ तथा हाथी आदि सेनाओं के कार्य; 9. पक्ष, कक्ष तथा उरस्य आदि विशेष व्यूहों का सेना के परिमाण के अनुसार व्यूहविभाग 10. सार तथा फल्गु बलों का विभाग; 11. चतुरंग सेना का युद्ध; 12. दंडव्यूह, भोगव्यूह, मंडलव्यूह, असंगतव्यूह और उनके प्रकृतिव्यूह तथा विकृतिव्यूह की रचना; 13. उक्त दंडादि व्यूहों के प्रतिव्यूहों की रचना आदि विषयों का विवेचन है।

विजिगीषु राजा को युद्ध कैसे करना चाहिए, इस पर कौटिल्य कहते हैं–

पार्वतं वनदुर्गं वा सापसारप्रतिग्रहम्।
स्वभूमौ पृष्ठतः कृत्वा युध्येत निविशेत च ।।[25]

अर्थात् विजिगीषु को चाहिए कि वह अपसार (भागे हुए या पराजित के छिपने की जगह) और प्रतिग्रह (आक्रमण करती हुई शत्रुसेना को गिरफ्तार करने की जगह) के युक्त पहाड़ी तथा जंगली दुगं अच्छी तरह तैयार करके और सर्वथा अनुकूल भूमि में ठहर कर युद्ध करे अथवा निश्चिन्त होकर निवास करे।

ग्यारहवाँ अधिकरण : संघवृत्त–निरूपण

ग्यारहवें अधिकरण में 2 अध्याय हैं जिनमें 1. भेदकप्रयोग; 2. उपाशुदंड का वर्णन है।

[25] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 10/2, पृ. 643

विजिगीषु राजा संघमुख्यों पर अपना आधिपत्य जमाये रखे और संघों को भी उचित है कि वे इस प्रकार की चेष्टा करने वालों तथा उनके द्वारा फैलाये गये षड्यन्त्रों से अपनी रक्षा करते रहें । कौटिल्य कहते हैं –

सङ्घमुख्यश्व सङ्घषु न्यायवृत्तिहितः प्रियः ।
दान्तो युक्तजनस्तिष्ठेत्सर्वचित्तानुवर्तकः ।।[26]

अर्थात् संघमुख्य को चाहिए कि वह संघों के बीच में न्यायपूर्ण हितकारी और प्रिय व्यवहार करे। कभी भी उद्धत होकर बर्ताव न करे और अपने अनुकूल व्यक्तियों को सदा अपने समीप रखे तथा सब संघों के व्यक्तियों की राय से राज– व्यवहार चलाये ।

बारहवाँ अधिकरण : आबलीयस का निरूपण

बारहवें अधिकरण में 9 अध्याय हैं जिनमें 1. दूतकर्म; 2. मंत्रयुद्ध; 3 सेनापतियों का वध; 4. राजमंडल की सहा– यता, 5. शस्त्र, अग्नि और रथों का गूढ़ प्रयोग; 6. विवध, आसार और प्रसार का नाश; 7. योगातिसंधान 8. दंडातिसंघान; 9. एकविजय विषयों का विवेचन है ।

दुर्बल राजा को किस प्रकार बचाव करना चाहिए, इस पर आचार्य कौटिल्य लिखते हैं–

मध्यमस्य प्रहिणुयादुदासीनस्य वा पुनः ।
यथासन्नस्य मोक्षार्थं सर्वस्वेन तदर्पणम् ।।[27]

अर्थात् दुर्बल राजा को चाहिए कि बलवान् शत्रु से अपनी रक्षा के लिए वह मध्यम, उदासीन और अपने समीपस्थ सभी राजाओं को यह संदेश भेजे कि 'सर्वस्व देकर मैं आप लोगों के सामने आत्मसमर्पण कर चुका हूँ। मैं आप लोगों के आश्रय से अलग नहीं हो सकता हूँ । अतः यथाशक्ति आप लोगों को मेरी रक्षा करनी चाहिए।'

तेरहवाँ अधिकरण : दुर्गप्राप्ति का निरूपण

तेरहवें अधिकरण में 6 अध्याय हैं जिनमें 1. उपजाप; 2. योगवामन; 3. गुप्तचरों का शत्रुदेश में निवास 4. शत्रु के दुर्ग को घेरना; 5. शत्रु के दुर्ग को तोड़ना; 6. जीते हुए दुर्ग में शांति कायम करना विषयों का विवेचन किया गया है।

आचार्य कौटिल्य ने विजिगीषु राजा के सन्दर्भ में कहा है –

विजिगीषु परग्राममवाप्तुकामः सर्वज्ञदं वतसंयोगख्यापनाभ्यां स्वपक्षमुद्धर्षयेत्, परपक्षं चोद्वेजयेत् ।[28]

अर्थात् यदि विजिगीषु राजा अपने शत्रु के गाँव या शहर पर अधिकार करने का इच्छुक हो तो उसे चाहिए कि वह स्वयं को सर्वज्ञ तथा देवता का साक्षात्कार करने वाला प्रसिद्ध करके अपने पक्ष को उत्साहित करे और शत्रुपक्ष में बेचैनी फैला दे।

चौदहवाँ अधिकरण : औपनिषदिक–निरूपण

[26] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 11/1, पृ. 675
[27] वही, 12/3, पृ. 691
[28] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 13/1, पृ. 705

चौदहवें अधिकरण में 3 अध्याय हैं जिनमें 1. शत्रुवध के प्रयोग; 2. प्रलंभन योग; 3. शत्रुद्वारा अपनी सेना पर किये गए घातक प्रयोगों का प्रतीकार विषयों का विवेचन है।

शत्रुनाश के लिए विषैली औषधियों का प्रयोग आचार्य ने बताया है –

चातुर्वर्ण्यरक्षार्थमीपनिषदिकमधर्मिकठेषु प्रयुञ्जीत ।[29]

राजा को चाहिए कि वह चारों वर्णों की रक्षा के निमित्त मंत्र और औषधों के प्रयोगों को अधार्मिक शत्रुओं में ही प्रयुक्त करे । राजा अन्धे, गूंगे, बहरे, बौने, कुबड़े आदि के रूप में विचरने वाले गुप्तचरों द्वारा शत्रु के शरीर या भोजन में कालकूट विष का प्रयोग करवा के उसे मरवा दे। अथवा शत्रु के क्रीड़ा–गृह में अपने तीक्षा नामक गुप्तचरों द्वारा शस्त्र रखवाकर उनसे समय पर शत्रु की हत्या करवा दे। घने जंगल आदि स्थानों में रात्रि के समय घूमकर जीविका कमाने या आग लगाने वाले गुप्तचर शत्रु के स्थान को आग से जलाकर उसे मार डालें। शत्रुनाश के लिए मन्त्रों का प्रयोग भी आचार्य ने बताया है –

मन्त्रभैषज्यसंयुक्ताः, योगाः मायाकृताश्च ये ।
उपहत्याहमित्रास्तः स्वजनं चाभिपालयत् ।।[30]

मन्त्र औषध तथा माया के योगों द्वारा सभी उपायों से शत्रु का नाश करना चाहिए और स्वपक्ष की परिपालना करनी चाहिए। मन्त्र के अथवा अभिचार के प्रयोगों द्वारा भी शत्रु का नाश किया जा सकता है।

पन्द्रहवाँ अधिकरण : तंत्रयुक्ति का निरूपण

पन्द्रहवें अधिकरण में एक अध्याय है जिसमें तंत्रयुक्तियों का निरूपण है । इसमें कौटिल्य अर्थशास्त्र के कथ्य के वर्गीकरण, विभाजन एवं 32 युक्तियों (1. अधिकरण 2. विधान 3. योग 4 पदार्थ 5. हेत्वयं 6. उद्देश्य 7. निर्देश 8. उपदेश 9. अपदेश 10. अतिदेश 11. प्रदेश 12 उपमान 13. अर्थापत्ति 14. संशय 15. प्रसंग 16. विपर्यय 17. वाक्यशेष 18. अनुमत 19. व्याख्यान 20. निर्वचन 21. निदर्शन 22. अपवर्ग 23 स्वसंज्ञा 24 पूर्वपक्ष 25. उत्तरपक्ष 26. एकांत 27. अनागतावेक्षण 28. अतिक्रांतावेक्षण 29. नियोग 30. विकल्प 31. समुच्चय और 32. ऊह्य) का विस्तृत विवरण है। [31]

7.4 सारांश

- अर्थनीति, राजनीति, धर्मनीति, कार्यनीति, तथा प्रशासन, कानून, मैत्री, युद्ध, रहस्य और जादू–टोने से लेकर कूटनीति तक की सारगर्भित व्याख्याएँ कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित हैं।
- सम्पूर्ण कौटिलीय अर्थशास्त्र में पन्द्रह अधिकरण; एक सौ पचास अध्याय; एक सौ अस्सी प्रकरण और छह हजार श्लोक हैं।
- अन्तः एवं बाह्य सभी साक्ष्य अर्थशास्त्र का लेखक आचार्य विष्णुगुप्त को बताते हैं। कौटिल्य एवं चाणक्य उनके अन्य नाम हैं।

[29] वही, 14/1, पृ. 738
[30] वही, 14/3, पृ. 759
[31] कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (गैरोला), 15/1, पृ. 766

- कौटिल्य ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों से विचार ग्रहण कर अपने ग्रन्थ का सृजन किया है ।
- ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से लेकर सातवीं शताब्दी ईस्वी तक के संस्कृत ग्रंथों पर अर्थशास्त्र का प्रभाव परिलक्षित होता है।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र के विभिन्न 15 अधिकरणों में विनयाधिकारिक, अध्यक्षों, न्याय, कण्टक–शोधन, योगवृत्त, प्रकृतियों, छह गुणों, व्यसनों, आक्रमण, संग्राम, संघवृत्त, आबलीयस, दुर्गप्राप्ति का निरूपण, औपनिषदिक और तंत्रयुक्ति का निरूपण किया गया है ।

7.5 शब्दावली

सोलह महाजनपद – अंगुत्तर निकाय के अनुसार 16 महाजनपद हैं – (1) अंग (2) मगध (3) काशी (4) कौशल (5) वज्जि (6) मल्ल (7) चेदि (8) वत्स (9) कुरु (10) पांचाल (11) मत्स्य (12) शूरसेन (13) अश्मक (14) अवन्ति (15) गांधार (16) कम्बोज ।

अर्थ एवं अर्थशास्त्र – मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं। मनुष्यों से युक्त भूमि को भी अर्थ कहते हैं । इस प्रकार की भूमि को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है ।

चाणक्य – आचार्य कौटिल्य का एक लोक–विश्रुत नाम चाणक्य है। चाणक्य उन्हें चणक का पुत्र होने के कारण और कौटिल्य उन्हें कुटिल राजनीतिज्ञ होने के कारण कहा जाता है ।

विद्या – विद्या चार हैं– आन्वीक्षिकी (सूक्ष्म तत्त्वों का अन्वीक्षण कराने वाली, दर्शन–विद्या), त्रयी (वेद–विद्या), वार्त्ता (वृत्ति अथवा जीविका को सिखाने वाली, अर्थ–विद्या) तथा दण्डनीति (राज्य में दंड व्यवस्था रखने वाली, शासन– विद्या) ।

विवाद सम्बन्धी कानून – इसके चार चरण हैं, जिनसे विवाद का निर्णय किया जा सकता हैकृधर्म अर्थात् धर्मशास्त्रों की व्यवस्था, व्यवहार अर्थात् साक्ष्य, चरित्र अर्थात् सज्जनों का आचरण तथा राजशासन अर्थात् राजा से प्रचारित आज्ञाएँ।

षड्गुण – राजा अपने प्रकृतिमण्डल में स्थित हुआ षड्गुण–नीति द्वारा क्षीणता से स्थिरता तथा स्थिरता से वृद्धि की अवस्था में जाने की चेष्टा करे। सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय और द्वैधीभाव–षड्गुण नीति के छः अंग हैं।

7.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. पृथिवी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए पुरातन आचार्यों ने जितने भी अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थों का निर्माण किया, उन सबका सार–संकलन अर्थशास्त्र है । कथन की समीक्षा कीजिए ।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र के उद्धार में देशी –विदेशी विद्वानों के योगदान पर एक लघु लेख लिखिए।
3. अर्थशास्त्र के लेखक कौन हैं ? समीक्षा कीजिए ।

4. अर्थशास्त्र का संस्कृत साहित्य पर प्रभाव विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।
5. कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषय वस्तु की विवेचना कीजिए ।
6. कौटिल्य अर्थशास्त्र का विभाजन किस प्रकार किया गया है ?
7. कौटिल्य अर्थशास्त्र के पहले पाँच अधिकरणों की कथावस्तु को स्पष्ट कीजिए ।
8. कूट युद्ध अथवा मन्त्र युद्ध के बारे में अर्थशास्त्र क्या वर्णन करता है?
9. दुर्बल राजा को किस प्रकार बचाव करना चाहिए?
10. शत्रुनाश के लिए विषैली औषधियों का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए ?

7.7 अभ्यास हेतु प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 से 10 तक के उत्तरों के लिए विद्यार्थी पाठ्यांश एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र पुस्तक की सहायता लेंगे।

7.8 उपयोगी पुस्तकें

- कौटिल्यकालीन भारत, आचार्य दीपंकर, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2003.
- कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, व्याख्याकार– वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1984.
- कौटिलीयम् अर्थशस्त्रम् (श्रीमूलाटीकासहितम्), संपादक – टी.गणपति शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली, 2006.
- कौटिलीयार्थशस्त्रम्, (पञ्चटीकोपेतम्), संपादक–आचार्यविश्वनाथशस्त्रिदातारः, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, 1991.
- धर्मशास्त्र का इतिहास (5), डॉ. पाण्डुरंग वामन काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्करण, 1992.
- पञ्चतन्त्र, विष्णुशर्मा, संपादक – ज्वाला प्रसाद मिश्र, बोम्बे : श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, 1966
- दशकुमारचरितम्, दण्डी, संपादक – शिवप्रसाद शर्मा, वाराणसीः चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, 2014
- नीतिसार, कामंदक, संपादक – टी. गणपति शास्त्री, त्रिवेंद्रम : त्रावणकोर राजकीय संग्रहालय, 1912
- Kautilya Arthashastra, translated by R. Shamshastry; Mysore Printing and Publishing House, Mysore, 1960.
- Kautilya Arthashastra, translated by R. Shamshastry; Chaukhambha Sanskrit Sansthan, Delhi, 2005.
- Readings in Kautilya's Arthashastra, B.P. Sinha, Agam Prakashan, Delhi, 1976.
- The Kautilya Arthashastra (in three volumes) by R. P. Kangle, M.L.B.D., Delhi,2008.